

वीरांगना झलकारी बाई (मोहनदास नैमिशराय) : दलित अस्मिता के सरोकार

डॉ. अंकिता विश्वकर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, पूर्णियाँ कॉलेज, पूर्णियाँ (पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ)
ईमेल – vishwakarmaankita16@gmail.com

शोध सारांश – वीरांगना झलकारी बाई हिन्दी के प्रसिद्ध दलित कथाकार मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखा गया दलित अस्मिता के सरोकारों से परिपूर्ण उपन्यास है। कथाकार ने वीरांगना झलकारीबाई के बाल्यावस्था के प्रसंग के माध्यम से उनकी वीरता एवं साहस का वर्णन किया है। दलितों एवं पिछड़ों को सवर्ण समाज के मुखौटा ओढ़े प्रतिनिधि वीर एवं साहसी होने की धारणा को अस्वीकार करते थे। बाल विवाह से उत्पन्न समस्याएँ, झाँसी के राजा के अकर्मण्यता, भोग विलास, जनता पर सत्ता पक्ष और अंग्रेजों की नीतियों के दहरे मार का चित्रण किया गया है। वीरांगना झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई की सहगामिनी बनकर 1857 ई. की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार की। एक सैनिक के रूप में उन्होंने उन्होंने दलित एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं को तलवार चलाना सीखाया और प्रशिक्षण के क्रम में ही ब्राह्मण समाज के मिथ्यारोप के दंश को झेला। रानी लक्ष्मीबाई के समान ही मुखमुद्रा के कारण झलकारीबाई अंग्रेजों द्वारा पकड़े जाने पर निडरता के साथ खड़ी रही। अंग्रेजों द्वारा जीवित छोड़े जाने पर वे झाँसी को स्वतंत्र न करा पाने के कारण दुःखी हुई।

बीज शब्द – वीरांगना झलकारी बाई, दलित अस्मिता, सवर्ण समाज, जनेऊ, बाल विवाह, गऊ-हत्या, जाति, अंग्रेज, इतिहास।

मूल आलेख – वीरांगना झलकारी बाई मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखा हुआ दलित स्त्री अस्मिता के सरोकारों से सम्बंधित उपन्यास है। जिसमें कथाकार ने रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सखियों में से एक झलकारी बाई के जीवन-चरित, उनके संघर्षपूर्ण जीवन और झाँसी की स्वतंत्रता के लिए प्रदर्शित वीरता एवं साहस का वर्णन किया है। दलित-पिछड़े वर्ग के पात्र को अपने उपन्यास का नायक बनाकर उन्होंने इतिहास के आईने में छिपी दलित अस्मिता के प्रश्नों को वर्णित एवं व्याख्यायित करने का सारगर्भित एवं प्रशंसनीय कार्य किया है।

वीरांगना झलकारीबाई का जन्म झाँसी के निकट भोजला नामक कोइरी परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम लहकारी बाई, पिता का नाम सदोबा मूलचंद था। वे बचपन से ही वीर और साहसी थीं। कथाकार ने बाघ के हमले के प्रसंग का वर्णन किया है। जिसमें झलकारी बाई ने अपनी सूझ-बूझ और साहस से शेर को मार गिराया। दलित और पिछड़े वर्ग के लोगों के साहसपूर्ण कृत्यों पर सवर्ण समाज को विश्वास ही नहीं होता है। वे कहते हैं – “छोटी जात की लड़की किसी बाघ को मार दे। तत्कालीन समाज की परिपाटियों के अनुसार इसमें विरोधाभास था। वीरता और बहादुरी के सारे गुण तो सवर्ण समाज के क्षत्रियों के लिए सुरक्षित कैर रखे थे। और दलितों और पिछड़ों के खाते में अवगुण के साथ अयोग्यताओं की भरमार थी।” सवर्ण समाज चाहता था कि दलित और पिछड़े एक साथ मिलकर न रहें। वीरांगना झलकारी बाई में बाल विवाह के दंश का वर्णन किया गया है। छोटी उम्र में हुयी शादी में बालक/बालिकाएँ विवाह का वास्तविक अर्थ भी नहीं समझ पाते थे। कम उम्र में विवाह से स्त्रियों को अनेक कष्ट झेलने पड़ते थे, ऐसा लगता था कि उनका जन्म पत्नी और दासी बनने के लिए ही हुआ हो – “वह पिंजरा सोने का होता था

चाँदी का या फिर साधारण लोहे का होता तो पिंजरा ही था। पिंजरे के कैदी का दर्द एक ही जैसा होता।”² सभी बालवधुओं की सीमारेखा घर की चारदीवारी तक ही सिमट कर रह जाती थी।

ईसाई मिशनरियों और बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने भारतीय समाज में विद्यमान अस्पृश्यता और अशिक्षा इत्यादि समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया। उस समय भोजला गाँव में पाठशाला नहीं थी। ब्राह्मण अपने घर पर सवर्ण समाज के बच्चों को पढ़ाते थे। दलितों और पिछड़ों को उन लोगों ने शिक्षा से दूर कर दिया था। झलकारी बाई बौद्ध भिक्षुओं को बताती है कि – वे कउर्ते पढ़वौ तमाओं काम नई।³

बुंदेलखंड में मराठा वंश की स्थापना से पहले झाँसी नेवलकर वंश में था। राजा रूद्रप्रताप ने ओरछा की स्थापना की। रूद्रप्रताप के पौत्र वीरसिंह देव ने झाँसी के किले का निर्माण कराया था। वृद्धावस्था में दतिया से झाँसी को न देखपाने के कारण वीरसिंह देव ने कहा कि आँखों में झई सी पड़ गयी है। इसी आधार पर इस किले का नाम झाँसी पड़ गया। झाँसी के पूर्व राजा रामचंद्र राव ने 1832 ई. में विलियम बैंटिक का स्वागत किया था। झाँसी के वर्तमान राजा गंगाधर राव अकर्ण्य होकर हमेशा रास रंग में झूबे रहते थे। जिससे जनता त्रस्त थी – “सुसंस्कृत और रंगीले राजों के ऐश्वर्य से उत्पन्न राज्य में मँहगाई के दबाव और अतिरिक्त करों के बोझ से थकी हारी जनता की पीठ पर फिरंगी चाबुक की मार भी पड़ती थी।”⁴

भारतीय हिन्दू समाज चातुर्वर्ण की व्यवस्था पर आधारित था। जाति प्रथा के मूल सिद्धांत इस प्रकार हैं – “(1). जन्म के आधार पर मनुष्यों में असमानता (2). व्यवसायगत असमानता, और (3). चारों मुख्य वर्गों में पूर्ण एवं कठोर सामाजिक विभाजन और उनकी उपजातियों के मध्य उतना ही कठोर भेदभाव।”⁵ समाज में सछूत और अछूत दो प्रकार की कोटियाँ थीं। अछूतों में भी दलित और पिछड़े दो प्रकार के लोग थे। पिछड़ों को सछूत छू सकते थे। झाँसी में हुए जनेऊ आंदोलन के समय वर्णव्यवस्था की दीवार गिरा पाना दलितों और पिछड़ों के लिए आसान नहीं था। राजा के आदेश से उनका मन आहत था। “शूद्रों को जनेऊ मत पहनने दो। अगर पहने तो उनके जनेऊ तोड़कर फेंक दिए जाएँ। साथ ही दूसरों आदेश भी था। वह यह कि ताँबे और लोहे के जनेऊ आग में लाल-लाल कर इन्हें पहनाया जाय।”⁶ झाँसी के महाराजा गंगाधर राव समानता के पक्षधर ने होकर पुरातनपंथी थे। दलित, पिछड़ों और नारी अधिकारों का वे विरोध करते थे। वीरांगना झलकारी बाई के बचपन के साथी चन्ना उर्फ चम्पालाल (जाटव) और रमची उर्फ रामचरन (वाल्मीकि) को बचपन से लेकर युवावस्था तक जलालत झेलनी पड़ती थी। सम्पन्न एवं दबंग वर्ग के पास निर्बल एवं कमजोर वर्ग के लोगों की दलित जातीय अस्मिता और पहचान पर चोट करने के अतिरिक्त कोई कार्य ही नहीं था। “दलित समाज में जन्में व्यक्ति के उम्र का कोई महत्व न था। महत्व था केवल वर्ण व्यवस्था पर आधारित नियमों और परम्पराओं का”⁷ उच्च वर्ग के बालक को भी बाऊ साहब, ब्राह्मण देवता इत्यादि कहना और दलित पिछड़े वर्ग के वरिष्ठ नागरिकों के लिये अपशिष्ट शब्दों का प्रयोग करना किस संस्कार एवं सभ्यता का प्रतीक है।

दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र पुस्तक में शरण कुमार लिंबाले ने सौंदर्यशास्त्र की चर्चा करते हुए कहते हैं कि भारतीय धर्म परंपरा में सत्य, शिव सुंदरम की परिकल्पना कि गई है, किन्तु इसके विपरीत दलित साहित्य दलित समाज में व्याप्त असत्य, असुंदर और अशिव की बात करता है - **“हिन्दू धर्मशास्त्र ने दलित मनुष्य के स्पर्श छाया और वाणी को अस्पृश्य माना है। अस्पृश्य के स्पर्श से अन्न पानी और मनुष्य अपवित्र होता है। मनुष्य ही नहीं ईश्वर भी अपवित्र होता है। अस्पृश्य के लिए अलग बस्तियाँ, अलग पनघट, अलग श्मशान भूमि की व्यवस्था की है।”** ⁸ चन्ना और रमची काम के तलाश में झाँसी आते हैं। झाँसी की नगर संरचना का उल्लेख करते हुए कथाकार ने बताया है कि दलितों का घर शहर के दूसरी छोर पर और गंदगी के अंबार पर ही होता है - **“दलित जातियों के लोग परकोटे के बाहर रहते थे। उनमें कुछ परिवार अंग्रेजों की सैनिक बस्ती के पास रहते थे और शेष वहाँ बसे थे जहाँ नगर भर का कूड़ा पड़ा होता था। उन्हें खास सीमा में रहने की ताकीद थी।”** ⁹

भारत की स्वतंत्रता के 76 वर्ष के बाद भी बहुत सारे आजादी के दीवाने गुमनाम अंधेरो में खोए हुए हैं। वर्तमान समय में उन्हें खोजकर निकालने के लिए अनेक कार्य किया जा रहा है। दलित एवं पिछड़े वर्ग के स्वतंत्रता सेनानियों के विवरण इतिहास एवं लोक में नहीं मिलता है, जिसका प्रमुख कारण इन्हें वीर और साहसी नहीं मानना था। मोहनदास नैमिशाराय जी कहते हैं - **“दलित समाज के लोग साहसी थे और बहादुर भी, लेकिन उनकी पहचान बने, ऐसा सवर्ण समाज नहीं चाहता था। उत्तर भारत में उनके लिए पग-पग पर अडचने थी। वर्ण व्यवस्था की दस्तक थी।”** ¹⁰ ऐसी विपरीत परिस्थिति में झलकारी बाई स्त्री और दलित पिछड़े वर्ग की होकर सैनिक के रूप में देश की सेवा करने के कार्य को सवर्ण समाज अवहेलना की दृष्टि से देखता था।

झलकारी बाई झाँसी की महिला सेना की कमांडर थी। प्रशिक्षण के दौरान गाय के बछड़े को गोली लग जाती है। जिसका गलत प्रचार करके झलकारी बाई और उनके पति पुरन को पंचायत द्वारा गो हत्या के लिए देश निकाला की सजा दे गयी। वे रानी लक्ष्मीबाई के पास अपनी समस्या लेकर जाते हैं लेकिन वे भी गऊ हत्या/चोट को अपराध की श्रेणी में मानकर उन्हें प्रायश्चित्त करने के लिए कहती है। मिथ्यारोपी ब्राह्मण को वे काई सजा नहीं देती है - **“पृथ्वी पर ब्राह्मण को देवता कहा गया था। उन्हें भू-राजस्व से शाश्वत मुक्ति प्राप्त थी और घोर से घोर पाप करने के लिए ब्राह्मण अबध्य था।”** ¹¹ रानी लक्ष्मीबाई ब्राह्मणों को नाराज नहीं करना चाहती थी।

कथाकार मोहनदास नैमिशाराय वीरांगना झलकारी बाई के लेखन का उद्देश्य बताते हुए कहते हैं कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भारत की जनता ने बिना किसी भेदभाव एवं वर्ण संघर्ष के अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। किन्तु जब भी इतिहास में शहीदों एवं महानायकों का वर्णन होता है। तो सवर्ण मानसिकता से ग्रसित इतिहासकार दलित विभक्तियों का उल्लेख तक नहीं करते हैं। इसलिए आज इतिहास को नर्वाने सिरे से लिखने की आवश्यकता है- **“चश्माधारी इतिहासकारों, साहित्यकारों और पत्रकारों में से किसी ने भी दलित समाज की उस वीरांगना झलकारी बाई की खबर नहीं ली थी।”** ¹² इस ऐतिहासिक दलित स्त्री आत्मकथात्मक उपन्यास के माध्यम से उन्होंने दलित और पिछड़े समाज की गौरवशाली इतिहास को प्रकाशित करके दलितों की नयी पीढ़ी को प्रेरित करने का प्रयास किया। वीरांगना झलकारी बाई में नारायण शास्त्री और महिला (छोटी) की कथा के माध्यम से अंतर्जातीय विवाह का उल्लेख करते हुए झाँसी में होने वाला सामाजिक परिवर्तन का वर्णन किया गया है। मछरिया में विद्यमान

दलित अस्मिता एवं चेतना विद्यमान है। डॉ. शरणकुमार लिंबाले के शब्दों में - **“मनुष्य को केन्द्र मानकर जाति व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने वाली यह प्रतीत है। इस चेतना की प्रेरणा अंबेडकरवादी विचार है।”** ¹³ अंबेडकर के पूर्व भी दलितों में मनुष्य रूप में सामाजिक मान्यता हेतु समाज से संघर्ष होते रहे हैं। महाराजा गंगाधर राव के अकर्मण्यता एवं स्वभाव से वह परिचित थी। इसलिए उनके गलत आचरण के लिए नारायण शास्त्री से तर्क करती है - **“वे राजा हैं, कुछ भी करे और हम परजा। सबई नियम का परजाई के लाने है। राजा अपने लाने कुछ नई सोचता। अरे बीस दासियों को हरम में रख सबई के साथ रंगरलिया, फिर भी आग न बुझाई।”** ¹⁴ राजा के भोग-विलास के कारण झाँसी की जनता में आक्रोश था। शास्त्री और मछरिया का अंतर्जातीय विवाह सामाजिक बंधनों को तोड़ने वाला था। इसलिए मनुवादी समाज इसे सहन नहीं कर सका। राजा के दरबार में उन्हें बुलाकर महाराजा गंगाधर राव द्वारा उन्हें देश निकाला दे दिया गया। किन्तु झाँसी की धरती पर परिवर्तन की एक लहर तो उठ ही गयी थी। भारतीय समाज की संरचना पितृसत्तात्मक है। बिना पुरुष के सहयोग के स्त्री विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकती है। वीरांगना झलकारी बाई उपन्यास में महिला पलाटन में सैनिकों की संख्या नहीं बढ़ रही थी। रानी लक्ष्मीबाई से झलकारी बाई ने कहा कि जब तक उनके पति नहीं कहेंगे वे सेना में सम्मिलित नहीं होगी। स्त्री जीवन का यह दारुण सच है कि वह सवर्ण समाज में हो या दलित पिछड़े समाज में उसकी समस्याएँ एक समान ही हैं। रानी लक्ष्मीबाई को अपनी पुरानी स्मृति याद आ जाती है - **“वे नाचने के लिए कहे तो नाचने लगे फूल से भरे सेज पर लेटने के लिए कहे तो बिछ जाऊँ सभी अपनी पत्नियों को अंकशायिनी बनाकर रखना चाहते हैं जाँबाज़ बनाकर नहीं”** ¹⁵ झाँसी के राजा को रानी का तलवार चलाना पसंद नहीं था, तो सामान्य परिवार के पुरुष अपनी पत्नियों को सेना में क्यों भेजना चाहते। समाज में प्रगतिशीलता की धारा प्रवाहित हो रही थी। जो पितृसत्तात्मक सोच को बदल रही थी।

झाँसी की स्वतंत्रता के लिए जनता अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार थी। इस स्वतंत्रता यज्ञ में सभी धर्मों के लोगों ने राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत होकर झाँसी के लिए प्राण-प्रण से लग गए। मोहनदास नैमिशाराय कहते हैं कि दलित वर्ग कमजोर नहीं है, किन्तु उन्हें कमजोर बनाने की साजिश जारी है - **“झलकारी न स्वयं कमजोर थी और न उनकी जाति थी। पर उन्हें कमजोर बनाए रखने की सदियों से चले आ रहे ऐसे नियम थे, जिन पर कड़ाई से पालन होता था।”** ¹⁶

सेना में दलित-पिछड़ों के शामिल होने से झाँसी का सवर्ण समाज नाराज था, किन्तु रानी समानता की पक्षधर थी। उनके लिए झाँसी की सुरक्षा एवं आजादी सर्वोपरि था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में वीरांगना झलकारी बाई की भूमिका का उल्लेख करते हुए कथाकार कहते हैं - **“जिस इतिहास ने 1857 की परिस्थितियों का निर्माण किया था। उसकी निर्मात्री अकेली रानी लक्ष्मीबाई नहीं थी, झलकारी भी थी। सुत काटते हुए उसने क्रांति की लड़ियों की बुनावट कर डाली थी। ऐसी बुनावट जिसमें अंग्रेज भी उलझकर रह गए थे।”** ¹⁷ एक सामान्य दलित स्त्री रानी लक्ष्मीबाई का सानिध्य पाकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में सहगामिनी बन गयीं।

प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के समय भारत में राष्ट्रीयता की भावना का अभाव था। देश छोटी-छोटी रियासतों में विभाजित था। वे एक-दूसरे को ईर्ष्या एवं विद्वेष की दृष्टि से देखते थे। झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद झाँसी पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया। लेकिन भारतीय जनता एवं देशी सैनिकों को कोई परवाह नहीं था। अंग्रेजों की संख्या कम

होने पर भी राजा, नवाब, बड़े जागीरदार उनके इशारे पर नाचते रहते थे।
“ झाँसी में सैनिक और असैनिक कुल मिलाकर झाँसी में अस्सी अंग्रेज थे। दूसरी तरफ झाँसी के ही हजारों देसी सैनिकों की मौजूदगी, उनकी देश-प्रेम की भावना तब कहीं चली गई। ”

18 झाँसी में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण जनता के व्यक्तिगत एवं सामूहिक हितों को आघात लगा था।

10 मई 1857 में मेरठ की छावनी में भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया था। झाँसी में पूरन कोरी और भाऊ बख्शी ने नेतृत्व संभालने का कार्य किया था। मेरठ और दिल्ली के सिपाहियों के सहयोग से झाँसी और कानपुर अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त हो गए। 8 जून 1857 को झाँसी में विद्रोह की अग्नि पुनः प्रज्वलित हो गयी। झाँसी में घोषणा किया गया – **“अमूल खुदा का झाँसी लक्ष्मीबाई की – फिरंगियों को मार डालो। ”**¹⁹ इस उद्घोष से लग रहा था कि झाँसी की रानी को उनका खिलाफ वापस मिल गया था।

अंग्रेजों की चौतरफा घेराबंदी के विरुद्ध वीरांगना झलकारी बाई और पूरन के नेतृत्व में दलित और पिछड़ी जाति के लोगों ने युद्ध प्रारंभ किया। झलकारी बाई ने अदम्य वीरता और साहस का परिचय दिया। वे चाहती थी कि रानी लक्ष्मीबाई बिठूर के सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाएं। झलकारी बाई अंग्रेजों की सेना पर भारी पड़ रही थी- **“वे पाँठ दिखाकर मरना नहीं चाहती थी। लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त होने की उनकी ललक थी। जूनन था उनके भीतर। ”**²⁰ वीरांगना झलकारी बाई देखने में रानी लक्ष्मीबाई एक समान ही लगती थी। अंग्रेजों का ध्यान भटकाने के लिए झलकारी बाई अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया और मेजर जनरल ह्यरोज से मिलने की बात करती है।

अंग्रेज सैनिक प्रसन्न हुए कि उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई को पकड़ लिया है और वे विजयी हो गए हैं। लेकिन झाँसी का देशद्रोही दुल्हाज ने उन्हें पहचान लिया। जिससे लक्ष्मीबाई उस पर क्रोधित हो गयीं – **“अरे पापी तै ठाकुर होके याई का करौ। तै पैदा होतई मर कौ नई गयौ। रानी का नमक खाकर भी खदारी की। ”**²¹

दुल्हाज के बताने पर ह्यरोज झलकारी बाई को गोली मारने के लिए कहता है। इस पर प्रतिक्रिया करते हुए वे बोली कि मुझे मौत से डर नहीं लगता है। उनकी और साहस से प्रभावित होकर मेजर जनरल ह्यरोज स्टुअर्ट से कहता है – **“नो स्टुअर्ट अगर हिन्दुस्तान की एक फीसदी लड़कियाँ भी इस लड़की की तरह दीवानी हो गई तो हम सबको यह देश छोड़ भागना पड़ेगा। ”**²² अंग्रेज जनरल ने झलकारी बाई को उनकी निडरता के कारण जीवित छोड़ दिया। जीवित बच जाने के बाद भी झलकारी बाई दुःखी थी क्योंकि सामान्य दलित और पिछड़े वर्ग की महिला होकर भी कमांडर बनी। झाँसी की महिलाओं को तलवार चलाना सीखाया और अपने अधिकारों के लिए सवर्ण समाज से संघर्ष किया लेकिन वह झाँसी को अंग्रेजों के चंगुल से नहीं बचा पायी।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि वीरांगना झलकारी बाई उपन्यास के माध्यम से मोहनदास नैमिशराय ने भारतीय इतिहास की दलित और पिछड़े वर्ग के की नायिका झलकारी बाई के जीवनवृत्त के माध्यम से इतिहास के गर्त में छिपी दलित अस्मिता, उनके संघर्ष को वर्णन किया है। भारत के पितृसत्तात्मक संरचना एवं सवर्ण समाज से मुठभेड़ करती हुयी वे रानी लक्ष्मीबाई की सहगामिनी बनकर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का परचम लहराती है। उपन्यास के माध्यम से कथाकार सामान्य जनता के दुःख पीड़ा एवं सत्ता परिवर्तन से उत्पन्न परिस्थितियों का वर्णन किया है। अंबेडकर और अन्य सामाजिक सुधारक बाद में आए किन्तु दलित अस्मिता एवं चेतना के बीज 1857 ई. के पहले से भारतीय दलित और पिछड़े वर्ग के अंदर विद्यमान थी, जो बाद में प्रस्फुटित हुई। वीरांगना

झलकारी बाई के बारे में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं-

**“जा कर रण में ललकारी थी,
वह तो झाँसी की झलकारी थी।
गोरों से लड़ना सिखा गई,
है इतिहास में झलक रही,
वह भारत की ही नारी थी। ”**²²

संदर्भ सूची

1. वीरांगना झलकारी बाई, मोहनदास नैमिशराय, राधाकृष्ण पेपरबैक्स संस्करण – पहली आवृत्ति – 2022, पृ. सं. – 23
2. वही, पृष्ठ – 16
3. वही, पृष्ठ – 27
4. वही, पृष्ठ – 35
5. आधुनिक भारत के निर्माता भीमराव अंबेडकर, डब्ल्यू.एन.कुबेर, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली, संस्करण – 2023, पृ. सं. – 1
6. वीरांगना झलकारी बाई मोहनदास नैमिशराय, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, संस्करण पहली आवृत्ति – 2022, पृष्ठ सं. – 38
7. वही, पृष्ठ – 51
8. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – डॉ. शरणकुमार लिंबाले, सम्पादक रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – आवृत्ति – 2020, पृ. सं. – 32
9. वीरांगना झलकारी बाई, मोहनदास नैमिशराय, राधाकृष्ण पेपरबैक्स संस्करण – पहली आवृत्ति – 2022, पृ. सं. – 51
10. वही, पृष्ठ – 64
11. आधुनिक भारत के निर्माता भीमराव अंबेडकर, डब्ल्यू.एन.कुबेर, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली, संस्करण – 2023, पृ. सं. – 2
12. वीरांगना झलकारी बाई, मोहनदास नैमिशराय, राधाकृष्ण पेपरबैक्स संस्करण – पहली आवृत्ति – 2022, पृ. सं. – 5
13. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, – डॉ. शरणकुमार लिंबाले, सम्पादक रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – आवृत्ति – 2020, पृ. सं. – 44
14. वीरांगना झलकारी बाई, मोहनदास नैमिशराय, राधाकृष्ण पेपरबैक्स संस्करण – पहली आवृत्ति – 2022, पृ. सं. – 39
15. वही, पृष्ठ – 64
16. वही, पृष्ठ – 81
17. वही, पृष्ठ – 44
18. वही, पृष्ठ – 58
19. वही, पृष्ठ – 91
20. वही, पृष्ठ – 95
21. वही, पृष्ठ – 99
22. वही, पृष्ठ – 100
23. <https://hindi.webduuia.com>